ISSN: 0973-0583

शिक्षा में सृजनशीलता : नूतन दृष्टिकोण एवं विधियाँ

निष्ठा नन्दनी

शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, सांईनाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

डॉ0 आनंद मौर्य

अनुसंधान पर्यवेक्षक, शिक्षा-शास्त्र विभाग, सांईनाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

शोध-सार

सीखने-सिखाने की क्रिया ही शिक्षा है। शिक्षा को जब व्यापक रूप में ग्रहण किया जाता है तो यह माना जाता है कि शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु होने तक येन-केन-प्रकारेण बना रहता है। शिक्षा सर्वदा व्यक्ति का कल्याण और पथ प्रदर्शन करके जीवन के हर मोड़ पर उचित कारणीय कर्तव्यों का ज्ञान एवं अनुभव प्रदान करती है। शिक्षा किसी देश-काल, परिस्थिति, स्थान, समय अथवा व्यक्ति विशेष तक सीमित न होकर अबाध रूप से बिना किसी व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि, शिक्षक के गतिशील रहती है। इस सृष्टि के सभी चर, अचर, जीव-जन्तु सजीव-निर्जीव समय-समय पर व्यक्ति को शिक्षा देने का कार्य करते है तथा शिक्षक की भूमिका निभाते है।

शब्द कुंजी: प्रत्यय, अबाध, निर्जीव, सर्वदा, प्रत्यय

भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा को 'जीवन के लिए तैयारी' के रूप में देखा जाता है जिसमें व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास की ओर ध्यान दिया जाता है। शिक्षा वह है जो ज्ञान, कौशल और मूल्यों का अर्जन, जो व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में सहायता करती है। यह केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अनुभव, प्रशिक्षण एवं सामाजिक अंत:क्रिया भी शामिल होते हैं। शिक्षा का अर्थ व्यक्ति को सक्षम बनाना है ताकि वह समाज में योगदान कर सकें एवं व्यक्तिगत एवं पेशेवर जीवन में सफल हो सकें। शिक्षा एक व्यापक एवं महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, मूल्य और आदतें प्रदान की जाती है। यह केवल स्कूल एवं कॉलेज में पढ़ाई तक सीमित नही है, बल्कि जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के मुख्य पहलू निम्नलिखित है।

शिक्षा न केवल थ्योरी बल्कि प्रैक्टिकल कौशल भी सिखाती है, जैसे कि गणन, लेखन और संचार कौशल, जो व्यक्तियों को उनके पेशेवर व व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करती है।

शिक्षा नैतिकता, संस्कार और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को सिखाती है। यह व्यक्तियों को अच्छा नागरिक एवं समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

शिक्षा व्यक्ति के आत्म-संवधन, आत्म-विश्वास एवं आत्म-समर्पण को बढ़ावा देती है। यह सामाजिक सम्बन्धों को सुधारने और समग्र जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होती है। शिक्षा संस्कृति, परम्पराओं और भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन करती है। यह सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सृजनशीलता

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के आधुनिक युग में विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत नित-प्रतिदिन नये-नये अविष्कार हो रहे है। इनमें से अधिकांश आविष्कारों के पीछे जहाँ वैज्ञानिकों का अथक परिश्रम है वही उनकी सृजनशीलता का भी कम योगदान नहीं है। इससे पहले माना जाता था कि लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार आदि व्यक्ति ही सृजनशील होते है परन्तु अब माना जाने लगा है कि मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ न कुछ सृजनशीलता पायी जाती है। सृजनशीलता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विनम्रतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से चिन्तन-मनन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनशीलता कही जाती है। सृजनशीलता को संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता,

खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, नवीनता आदि के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। इसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

नवीनता- सृजनशीलता का मुख्य तत्व नवीनता है। यह वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति नये और अद्वितीय विचार उत्पन्न करता है जो पहले से ज्ञात या प्रयोग किये गये विचारों से भिन्न होते है।

समस्या समाधान- रचनाशीलता का महत्वपूर्ण पहलू समस्या-समाधान है, यह न केवल नये विचार उत्पन्न करता है, बल्कि मौजूदा समस्याओं का नया एवं प्रभावी तरीके से समाधान भी प्रस्तुत करता है।

मूल्यता- केवल नूतन विचार उत्पन्न करना ही रचनाशीलता नहीं है, अपितु उन विचारों की व्यावहारिक उपयोगिता और उनके संभावित प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। एक विचार सृजनशील तब माना जाता है जब वह वास्तविक दुनिया में उपयोगी और मूल्यवान हों।

खोज एवं प्रयोग- सृजनशीलता की प्रक्रिया में खोज एवं प्रयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्रक्रिया असामान्य विचारों और संभावनाओं की जॉच करने एवं नूतन दृष्टिकोणों को अपनाने पर आधारित होती है।

स्वतंत्रता एवं अनुकूलता - सृजनशीलता में अक्सर स्वतंत्र सोच और रचनात्मक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। यह व्यक्तियों को पारंपरिक सोच और मानको को चुनौती देने का अवसर देती है।

भावनात्मक एवं बौद्धिक जुड़ाव- रचनाशीलता भावनात्मक एवं बौद्धिक जुड़ाव से भी प्रभावित होती है। व्यक्ति की आंतरिक प्रेरणा, रुचियाँ और व्यक्तिगत अनुभव भी रचनाशीलता को प्रेरित कर सकते हैं।

Creativity या रचनाशीलता नूतन एवं मौलिक विचारों, समाधानों या उत्पादों के निर्माण करने की क्षमता रचनाशीलता वह गुण है जिसमें व्यक्ति सामान्य ढंग से सोचने के बजाय, नवाचार, कल्पना, और नयी सम्भावनाओं की ओर अग्रसर होती है। इसमें मौजूदा ज्ञान एवं अनुभव का नूतन विधि से उपयोग करके नयी चीजें उत्पन्न करना शामिल है। यह कला, विज्ञान, व्यवसाय एवं दैनिक जीवन के समस्त पहलुओं में प्रकट हो सकती है।

सृजनशीलता का नूतन दृष्टिकोण- सृजनशीलता का नूतन दृष्टिकोण वह हैं जिसमें एक व्यक्ति या समूह नवाचार एवं रचनात्मकता को नये एवं अनोखे तरीके से प्रयोग में अपनाता है। यह दृष्टिकोण पारंपरिक सोच एवं पद्धतियों से हटकर नये समाधान और विचार प्रस्तुत करता है। नूतन दृष्टिकोण से निम्नलिखित तत्व शामिल हो सकते हैं।

- वर्तमान मानकों और प्रक्रियाओं को चुनौती देना एवं नये विचारों को अपनाना।
- विभिन्न क्षेत्रों एवं अनुशासन के विचारों को शामिल करके नये समाधान विकसित करना।
- त्वरित बदलाव एवं अनुकूलन के प्रति खुलापन।

यह अभिनव विधि से समस्या-समाधान और विचारों को प्रस्तुत करने का तरीका है। पारंपरिक सोच से हटकर खुले मन एवं प्रयोगात्मक दृष्टिकोण को अपनाने पर बल देता है।

नूतन दृष्टिकोण में विभिन्न पृष्ठभूमियों, अनुभवों और दृष्टिकोणों से विचारों को जोड़ने की प्रक्रिया शामिल होती है। इससे रचना को नयी दिशा प्राप्त होती है एवं नये समाधान खोजने की संभावनाएँ बढ़ जाती है।

विभिन्न क्षेत्रों एवं अनुशासनों को मिलाकर समस्याओं का समाधान खोजना। उदाहरण के लिए एक डिजाइनर और एक वैज्ञानिक के सहयोग से एक नयी तकनीक का विकास हो सकता है। पुराने समाधान एवं प्रक्रियाओं को चुनौती देना और नये दृष्टिकोण को आत्मसात करना। इसमें मान्यता प्राप्त मानदंडो और विधियों का पुनः मूल्यांकन करना शामिल है। नये विचारों और प्रयोगों को क्रिया में लाना, बिना किसी डर, भय के असफलताओं से सीखना। नूतन दृष्टिकोण में प्रयोग एवं रिस्क लेने की प्रवृत्ति होती है जो नवाचार को प्रोत्साहित करती है।

नूतन विचारों एवं समाधानों को बड़े पैमाने पर लागू करने की क्षमता। सृजनशीलता सिर्फ छोटे प्रयोगों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उन विचारों को बड़े पैमाने पर लागू करने की कोशिश करती है। सृजनशीलता के नूतन दृष्टिकोण में यह समझा जाता है कि सृजनशीलता केवल नवीन विचारों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अनुभवों एवं भावनाओं की गहरी समझ भी शामिल है। इसमें संवेदनशीलता और स्थिति की गहराई से समझने की क्षमता शामिल है। सृजनशीलता को एकल दृष्टिकोण से देखने के पश्चात विभिन्न आयामों और दृष्टिकोणों से देखा

जाता है। इसमें विभिन्न क्षेत्रीय, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोणों को शामिल किया जाता है, जिससे अधिक समृद्ध एवं विविध समाधान उत्पन्न होते हैं।

अब रचनाशीलता को एक ही क्षेत्र तक सीमित नहीं माना जाता। विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान एवं दृष्टिकोणों को एकत्रित करके समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने पर जोर दिया जाता है। जैसे-कला और विज्ञान या मानविकी और तकनीक के संयोग से नये और अनोखे समाधान उत्पन्न हो सकते है। नये दृष्टिकोण में सामाजिक सन्दर्भ और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझना महत्वपूर्ण है। यह विचार कि रचनाशीलता केवल व्यक्तिगत कल्पना तक सीमित नहीं है बल्कि समाज के विभिन्न हिस्सों एवं उसकी जरूरतों से भी जुड़ी है। पारंपरिक दृष्टिकोण में विफलता को असफलता मानते हुए नकारा जाता है परन्तु नये दृष्टिकोण में विफलता को सीखने और प्रयोग के हिस्से के रूप में देखा जाता है, इसका अर्थ है कि नवाचार के लिए जोखिम लेना और विफलताओं से सीखना स्वीकार किया जाता है। सृजनशीलता के नये दृष्टिकोण में विविध विचारों और पृष्ठभूमियों के लोगों को शामिल करने पर जोर दिया जाता है। यह विविधता नये एवं अनूठे विचारों को शामिल करती है एवं विभिन्न दृष्टिकोणों के संगम से बेहतर समाधान निकाले जा सकते है। विभिन्न विचार धाराओं एवं संभावनाओं को समानांतर रूप से सोचने की प्रक्रिया में, एक समस्या के लिए कई समाधान खोजे जा सकते है एवं इनका अनपेक्षित समाधान प्राप्त हो सकता है। आजकल की सृजनशीलता में प्रौद्योगिक एवं डिजिटल टूल्स का व्यापक उपयोग होता है। ये टूल्स डेटा विश्लेषण, डिजिटल डिजाइन और अन्य पहलुओं में क्रांति ला रहे हैं एवं नये एवं प्रभावशाली समाधान उत्पन्न हो रहे हैं।

सृजनशील मस्तिष्क की विभिन्न संरचनाओं एवं उसके आपसी सम्बन्धों पर निर्भर करती है। हाल ही के अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि मस्तिष्क के विभिन्न हिस्से जैसे- प्रीफंटल कार्टेक्स और एसोसिएटिव नेटवर्क, सृजनात्मक सोच में भूमिका निर्वहन करते हैं। न्यूरोसाइंटफिक अनुसंधान रचनाशीलता को समझाने के लिए मस्तिष्क की गतिविधियों एवं कार्य प्रणालियों की गहराई से जाँच करता है। आधुनिक रचनाशीलता के दृष्टिकोण में यह मान्यता है कि विचारों के मध्य कनेक्शन एवं विविधता रचना को बढ़ावा देती है। जब व्यक्ति विभिन्न अनुभवों और ज्ञान क्षेत्रों में मदद करता है। सृजन केवल व्यक्तिगत गुण के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि इसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ में भी समझा जाता है। समाज, संस्कृति एवं सामाजिक नेटवर्क सृजनशीलता को प्रभावित करते है, जैसे-विचारों का आदान-प्रदान और सहयोगात्मक प्रयास। नवीनतम् शोध ने यह दर्शाया कि प्रेरणा एवं मनोवैज्ञानिक स्थिति भी सृजनशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। सकारात्मक मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ जैसे आत्मप्रेरणा, सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है। आधुनिक दृष्टिकोण यह मानते है कि सृजनशीलता की आवश्यकता एवं समस्या को हल करने की प्रेरणा भी महत्वपूर्ण है। जब कोई व्यक्ति किसी समस्या का सामना करता है या किसी विशेष आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास करता है तो नये एवं अनूठे ढंग से समाधान में यह भी माना जाता है कि प्रयोग और विफलता से सीखना महत्वपूर्ण है। नूतन विचारों को आजमाना एवं विफलताओं से सीखना सृजनशीलता के विकास में मदद करता है।

सृजनशीलता का नूतन दृष्टिकोण एक व्यापक एवं बहुआयामी परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है, पारंपरिक दृष्टिकोण में रचनाशीलता को मुख्यत: कलात्मक या अद्वितिय विचारों के निर्माण के रूप में देखा जाता था। लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण में इसे और भी व्यापक तरह से समझा जाता है। अब सृजनशीलता को विभिन्न विचार-धाराओं, संस्कृतियों एवं पृष्ठभूमियों के मेल से देखा जाता है। विविधता नये अनोखे विचारों को जन्म देती है। सृजनशीलता केवल नये विचारों का निर्माण ही नहीं है, बल्कि नूतन समस्याओं के समाधान की दिशा में भी होता है। इसका अर्थ है कि इसे व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है। अब रचनाशीलता को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है न कि केवल अंतिम परिणाम के रूप में। इसमें प्रयोग, असफलता एवं पुनरावृत्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है। डिजिटल तकनीक एवं डेटा एनालिटिक्स ने रचनाशीलता की नूतन विधियों को जन्म दिया है, जैसे- आर्टिफिसियल इंटिलिजेंस एवं मशीन लर्निंग के साथ नवाचार। व्यक्तिगत अनुभव एवं आत्मसर्मपण भी सृजनशीलता के महत्वपूर्ण भाग है। आत्मज्ञान एवं व्यक्तिगत संवेदनशीलता नये विचारों को जन्म दे सकती है।

सृजनशीलता की विधियाँ- सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने और नये विचारों को जन्म देने के लिए अनेक विधियाँ अपनायी जा सकती हैं। ब्रेनस्टॉर्मिंग विधि द्वारा समूह या अकेले विचारों की बाढ़ आ सकती है। इस प्रक्रिया में बिना किसी कारण स्पष्ट विचारों को स्वीकार कर लिया जाता है और फिर सबसे अच्छे विचार का चयन किया जाता है।

मेटाफोर एवं एनालाजीज विधि में किसी समस्या को एक भिन्न संदर्भ में देखने के लिए मेटाफोर (रूपक) और एनालॉजीज (सादृश्य) का उपयोग किया जाता है। इससे समस्या का नूतन दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सकता है।

स्कैम्पर एक वैज्ञानिक तकनीक है जिसमें विचारों को संशोधित करने के लिए अनेक विकल्प दिये जाते हैं- विकल्प (Substitude), मिलाना (Combine), अनुकूलित करना (Adapt), संशोधित करना (Modify), अन्य उपयोग में लाना (Put to another use), हटाना (Eliminate), पुनर्व्यवस्थित करना (Rearrange)

डिजाइन थिकिंग द्वारा समस्या को उपयोगकर्त्ता के दृष्टिकोण से समझना एवं समाधान को मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण से विकसित करना होता है। इसमें समझ, परिभाषा, विचार, प्रोटोटाइप एवं परीक्षण चरण शामिल होते हैं।

रोल रिवर्सल किसी समस्या का समाधान खोजने हेतु प्रयोग किया जाता है। कल्पना करें कि आप उसके विपरीत स्थिति में है या समस्या को उल्टा सोचें। अनुवर्ती प्रश्नों के द्वारा समस्या को पुनः परिभाषित करना और विभिन्न कोणों से विचार करना। यह अक्सर नयी संम्भावनाओं को लेकर आता है। योग्यता-स्वतंत्र विचार के द्वारा पारंपरिक सोच से हटकर नूतन एवं अभिनव विचारों की ओर अग्रसर हुआ जाता है। इमसें जोखिम लेने और अपरम्परागत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होती है।

नये विचारों की खोज करने के लिए अपने आस-पास की चीजों, घटनाओं, और लोगों को गहराई से देखें। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला एवं साहित्य से प्रेरणा प्राप्त कर सकते है। अपने मन में आने वाले विचारों को बिना किसी पूर्वाग्रह से लिखें यह प्रक्रिया हमें अधिक से अधिक विचारों को उत्पन्न करने में सहायता करेंगी।

किसी समस्या या चुनौती को सुलझाने की कोशिश करें। जब आप किसी समस्या के समाधान के लिए कोई हल खोजते हैं, तो रचनाशीलता निखर कर सामने आती है। पुरातन या पारंपरिक विचारों को नूतन तरीके से जोड़ने का प्रयास करें। इससे आप कुछ नया एवं अभिनव बना सकते है।

किसी समस्या पर गहराई से जानकारी प्राप्त करें। जब किसी विभिन्न दृष्टिकोण को समझते है, तब आपको नया दृष्टिकोण विकसित करने में आसानी होगी। सृजनशीलता को बढ़ावा देने के लिए नूतन विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग करें। असफलता से न डरे, क्योंकि यही सृजनशीलता का हिस्सा है। नियमित अभ्यास एवं समर्पण सृजनात्मकता को उपर ले जाने में सहायता करता है। अनुशासन से आप अपनी रचना शक्ति को बढ़ा सकते हैं। अपने विचारों एवं कार्यों पर पुनर्विचार करें। उन पर विशेष बल देकर और अधिक बेहतर बनायें, संशोधन और सुधार रचना को निखारने का कार्य करते हैं। अपने कार्य पर दूसरे अन्य व्यक्तियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करें। प्रतिक्रिया के अनुसार उसमें अपेक्षित सुधार करें, इससे कभी-कभी बाहरी दृष्टिकोण से नयी दिशा मिल सकती है।

सबसे पहले, विचारों को संग्रहित करना महत्वपूर्ण है। अपने अनुभवों, अध्ययन एवं अवलोकन से नये विचार को उत्पन्न करें। शैक्षणिक, पर्यावरण व अन्य व्यक्तियों के साथ संवाद से प्रेरणा प्राप्त करें। अपने अन्दर के सभी विचारों को बिना किसी जजमेंट के बाहर निकालें यह प्रक्रिया विचारों की व्यापकता एवं विविधता को लेकर आती है। अलग-अलग विचारों को जोड़कर एक नये विचार का सृजन करें। यह रचनाशीलता का अहम हिस्सा है, जहाँ सैद्धान्तिक एवं परम्परागत सोच को चुनौती दी जा सकती, और नये तरीके निकाले जा सकते हैं।

रचनाशीलता के लिए प्रयोग आवश्यक है। नूतन तरीके और विधि को आत्मसात करें, असफलताओं से सीखें एवं बिना डरे अपने विचारों का परीक्षण करें। यह प्रक्रिया आपको अपने कार्य में कुछ नयापन लाने में सहायता करेगी। प्राप्त विचारों एवं परिणामों को समय-समय पर परिमार्जित करें। सोचें कि इसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? हर रचनात्मक प्रयास को सुधारा और परखा जा सकता है। रचनाशीलता को समय की आवश्यकता होती है, जल्दी में किसी भी निर्णय पर न जाये। शनै-शनै अपने विचारों को आकर प्रदान करें एवं उसे विकसित

होने क अवसर प्रदान करें।

सृजनशीलता की नयी विधि तेजी से विकसित हो रही है, खासकर आधुनिक तकनीक, डिजिटल टूल्स और सामाजिक सन्दर्भों के कारण AI आधारित टूल्स जैसे कि DALL-E, GPT और अन्य एआई मॉडल्स ने सृजन की प्रक्रिया को तेज और सरल बना दिया है कलाकार, लेखक और डिजाइनर अब AI की सहायता से अपनी कल्पनाओं को और अधिक सजीव बना सकते हैं। ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे कि Miro, Figma और Nation विधिक क्षेत्रों के लोगों को एक मंच पर लाकर सृजनशील कार्यों में सहयोग का अवसर देते है। ये प्लेटफार्म साझा विचार-विमर्श एवं प्रोजेक्ट निर्माण को सरल और सशक्त बनाते हैं। ये तकनीकें रचना के नूतन आयाम खोल रही है। वर्चुअल रियलिटी में कलाकार 3D स्पेस में काम कर सकते हैं, जबकि आगमेंटेड रियलिटी वास्तविक दुनिया में डिजिटल तत्वों को जोड़कर नयी संभावनाएँ प्रदान करती है। डिजिटल मीडिया एवं गेमिंग ने कहाँनियों को नये तरीके से प्रस्तुत करने की शक्ति दी है। अब रचनाकार इंटरैक्टिव और इमर्सिव अनुभवों के माध्यम से अपने दर्शकों को सीधे कहानी का हिस्सा बना सकते हैं। सृजनात्मकता अब केवल कला एवं साहित्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि कोडिंग और प्रोगामिंग में भी बढ़ रहा है। प्रोगामर नये एप्लिकेशन, गेम्स और डिजिटल टूल्स के माध्यम से अद्वितीय चीजें बना रहे हैं। ये सभी विधियाँ सृजनशीलता का नया आयाम प्रस्तुत करती हैं, जो उन पारंपरिक तरीको से परे जाकर विचारों को नयी ऊँचाइयों पर ले जाने की क्षमता प्रदान करती हैं।

सृजनात्मकता के विकास में शिक्षक का योगदान

सृजनशीलता के विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते है, बल्कि विद्यार्थियों के विचारों को प्रोत्साहित करने, उनकी समस्याओं को हल करने एवं नवाचारी सोच को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को नये विचारों एवं दृष्टिकोणों के लिए प्रेरित करते है, जिनसे उनकी रचनाशीलता को बढ़ावा मिलता है। शिक्षक विभिन्न सृजनात्मक गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की सोच और कल्पना शक्ति को प्रोत्साहित करते हैं।

निष्कर्ष:

शिक्षक छात्रों के कार्यों पर पुर्नबलन प्रदान करते हैं जिससे वे अपनी कमजोरियों को पहचान सकें एवं उसमें सुधार करें। एक सहयोगपूर्ण और सकारात्मक वातावरण प्रदान करके शिक्षक छात्रों को आत्मविश्वास एवं नवाचार के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक छात्रों को नवीन विचारों और समाधान की दिशा में प्रेरित करते है, जिससे उनकी सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। शिक्षक विभिन्न गतिविधियों एवं परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों की कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे- कला, संगीत व लेखन। शिक्षक विभिन्न दृष्टिकोण और समस्याओं के समाधान के तरीके प्रस्तुत करते हैं, जो छात्रों के नूतन सोच को विकसित करता है और उन्हें नवीन समाधान खोजने हेतु प्रोत्साहित करता है। शिक्षक एक सुरक्षित एवं सहयोगपूर्ण वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ शिक्षार्थी बिना डर एवं भय के नये विचारों को साझा करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सिंह, अरुण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, प्रथम संस्करण 194, भारती भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0-581-582
2. गुप्ता एस0पी0 एवं गुप्ता अलका, उच्चत्तर शिक्षा मनोविज्ञान, संस्करण 2012, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ सं0- 296-298
3. पाठक, पी0डी0, शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ, संस्करण 42वाँ, 2010, श्री विनोद पुस्तक भंडार, आगरा 2, पृष्ठ सं0- 483-486
4. मंगल, एस0 के0 शिक्षा मनोविज्ञान संस्करण 2013, पी0 एस0 आई0 लर्निंग लिमिटेड, दिल्ली, पृष्ठ सं0- 369-372
5. सिंह, रामपाल, अधिगम का मनोविज्ञान, छठा संस्करण 2013-14, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2, पृष्ठ सं0- 269-271
6. भटनागर सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, 11वाँ संस्करण, 2010 आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ-250001, पृष्ठ सं0-486-487
7. बेवसाईट एवं पत्रिकाएँ